रणनीतिक स्वायत्तता क्या है?

- रणनीतिक स्वायत्तता **किसी राज्य द्वारा** अन्य राज्यों से किसी भी रीति से बाधित हुए बिना **अपने राष्ट्रीय हितों को साधने तथा अपनी अधिमानित विदेश नीति को अपनाने की क्षमता** को दर्शाती है।
- **भारत और रणनीतिक स्वायत्तता:**
  - वैश्वीकरण के प्रभुत्व वाली द्विध्रुवीय या बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में, रणनीतिक रूप से स्वायत्त होने की क्षमता निरपेक्ष नहीं है, अपितु सापेक्षिक है।
  - इसके आधार पर भारत का रणनीतिक रूप से और भी कम स्वायत्त होना पूर्व निर्धारित है।
  - **सुरक्षा संबंधी प्रमुख मुद्दे:** भारत, निहित लागत के निरपेक्ष राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रमुख मुद्दों पर अपनी नीति परिवर्तित करने या अपने हितों को कमजोर करने संबंधी बाह्य दबाव का विरोध करता है।
    - उदाहरण के लिए, जम्मू और कश्मीर का मुद्दा तथा परमाणु हथियार जैसे प्रमुख राष्ट्रीय हित।
  - **सुरक्षा संबंधी गैर-प्रमुख मुद्दे:** भारत बाह्य दबाव के अंतर्गत गैर-प्रमुख सुरक्षा मुद्दों पर अपनी नीति में बदलाव कर सकता है या अपने हित को उदार बना सकता है, यदि अधिमान्य नीति अथवा हित से व्युत्पन्न लाभ संबद्ध लागतों से अनुपातिक रूप से उच्च हों।
    - उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका के दबाव में अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी में **ईरान के विरुद्ध मतदान करने का भारत का निर्णय।**

रणनीतिक स्वायत्तता की आवश्यकता

- **भू-रणनीतिक संतुलन:** भारत ने सदैव विभिन्न समूहों के साथ घनिष्ठ राजनयिक संबंध बनाए रखने का प्रयास किया है। उल्लेखनीय है कि इनमें वे समूह भी शामिल हैं, जो अन्य को शत्रु या प्रतिस्पर्धी मानते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** संयुक्त राज्य अमेरिका, सऊदी अरब और इज़रायल के साथ सुदृढ संबंधों की स्थापना के अनुसरण सहित भारत के ईरान के साथ भी समवर्ती राजनयिक संबंध हैं। ज्ञातव्य है कि ये सभी ईरान को एक बहिष्कृत राष्ट्र मानते हैं।
- **बहुगुटवाद (Multi-alignment) की आवश्यकता:** विकल्पों को अधिकतम करने तथा रणनीतिक स्वायत्तता में विस्तार करने हेतु स्वाभाविक रूप से कई प्रतिभागियों को शामिल करने की आवश्यकता है।
  - वर्तमान विश्व जटिल अन्योन्याश्रितता की विशेषता से युक्त है (जहां विभिन्न देश भू-रणनीतिक मुद्दों पर प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, जबकि भू-आर्थिक मुद्दों पर सहयोग कर रहे हैं) और इसलिए भारतीय विदेश नीति को **रणनीतिक प्रतिरक्षा** की आवश्यकता है।
  - उदाहरण के लिए, रणनीतिक स्वायत्तता के कारण भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सामरिक रक्षा संबंध बनाए रखे हैं। साथ ही, वह रूस के साथ S-400 के समझौते को भी आगे बढ़ाने का इच्छुक है।